# कोसी-गीत

ब्रजेश्वर मल्लिक

# कोसी-गीत

( पहिल कोसी लोकगीत संकलन )

सम्पादक

**ब्रजेश्वर मल्लिक**

ISBN :978-93-81591-79-6

**Kosi-Geet**

*(Maithili folk Anthology on River Kosi)*

***Edited by : Brajeshwar Mallick***

**कोसी-गीत**

(पहिल कोसी लोकगीत संकलन)

संपादक : ब्रजेश्वर मल्लिक

प्रथम संस्करण : 1943 ई.
द्वितीय संस्करण : 2017 ई.

**मूल्य : 200 टाका मात्र**

**वितरक**
मैथिली साहित्य संस्थान
बी-402, श्री राम कुंज अपार्टमेंट,
रोड नं.-4, महेश नगर, पोस्ट-केशरीनगर
पटना-800024
चलभाष- 09430606724

**ले-आउट** : फकीर मुहम्मद

**प्रकाशक एवं मुद्रक**
वातायन मीडिया एंड पब्लिकेशन प्रा.लि.
बी-101, एस.पी. वर्मा रोड, पटना-800 001
दूरभाष : 0612-2222920-9431040914

# दू शब्द

हमर ई प्रयास सफल रहल अछि किंवा असफल से तऽ सहृदय पाठके कहि सकैत छथि। ओना तँ हमर जन्म-स्थान कोसी पीड़ित प्रान्तमे अछि मुदा नेनपनक दिन प्रायः अन्तः बीतल। मैट्रिकुलेशनक कक्षा मे पढ़बाक निमित्त हमरा मधेपुरा स्कूल में नामांकन कराबय पड़ल रहय आओर तखनहिं हमरा कोसीक नांगट विभीषिकासँ सोझा-सोझीं होएबाक भरिपोख अवसर भेटल छल। एहि कालावधि में कोसीजनित पीड़ाक भेल कटु अनुभव वर्णनातीत अछि। संगहिं ओहि ठाम जिनगी मे एक अपूर्व मधुरता सेहो रहय जे बिजुली जकाँ धनगर मेघक बीच चमकि उठैत छल आ हमरा सभकें साहसक संचार करैत रहय। अवसर अयला उत्तर ओकरहु उल्लेख करब आर कोसीक बसिन्दाक सामाजिक जीवन ओ कोसी-प्रान्तक प्राकृतिक दृश्यक विषयमे अरबधि कए जनतब देब। 1934 ई. मे जखन हम विद्यालय में पढ़ैत रही, हमर पूज्य भाए बाबू ललितेश्वर मल्लिक, बी.एस.सी., बी.एल. द्वारा कोसी विषयक जे एक अत्यन्त, गम्भीर लेख अंग्रेजी दैनिक '**सर्चलाइट**' मे लिखल गेल छल आओर तखनहिंसँ हमर दिमागमे कोसीक प्रश्न एक अदद समस्याक रूपमे पैसि क स्थापित भऽ गेल रहय। फेर कॉलेजक दिन आयल तथा शहरक वायुमण्डल ई बात सपना जकाँ बूझि पड़य लागल। 1942 ई. मे जखन हम नोकरी मे नियुक्त भेलहुँ तखन हमरा सुपौलमे कोसी फ्लड रिलीफ अफसर बनि कए जाय पड़ल। ई.टी. प्रीडो साहेब तखन कलक्टर रहथि आ ओहय हमरा सुपौल पठबैत

कोसी-गीत सेहो संग्रह करबाक दायित्व देने छलाह। हमरा दिससं बीछिकए आनल गेल गीतमे किछुएकके अंग्रेजी मे ओ अपनहिं अनुवाद कयलनि जे '**मेन इन इण्डिया**' क 1943 ई. क मार्च अंक में प्रकाशित भेल छल। हम प्रीडो साहेबक कृतज्ञ छियन्हि जे एहन अवसर देलनि जाहिसँ ई पोथी प्रस्तुत करबामे हम समर्थ भेलहुं एवं कोसीक समस्याक जनतब पूर्णरूपेण लऽ सकलहुं।

एहि पोथीकँ तैयार करबाक क्रममे हमरा परम मित्र श्री नारायण प्रसाद वर्मा 'साहित्यभूषण', श्री बैद्यनाथ वर्मा, बी.ए. (डिस्टिंग्विशन), डाक्टर रामेश्वर प्रसाद वर्मा आओर श्री आशुतोष दास सँ जे सहायता भेटल अछि ताहि लेल हम सदति आभारी रहबन्हि। हमर पितिआइनि श्रीमती विद्यावती मल्लिक, बी.ए. सेहो एहि संकलनकें तैयार करबाक क्रम में मदति देने छथि। पण्डित बुद्धिनाथ झा 'कैरव' एम.एल.ए., रजिस्ट्रार, हिन्दी विद्यापीठ (देवघर) ओ श्री गोपाल लाल वर्मा, डिस्ट्रिक इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल, दुमका क आग्रहक ओजहिंस ई पोथी लगले प्रकाशित भए रहल अछि।

हम श्रीमहादेव लाल 'विशारद', प्रोफेसर हिन्दी विद्यापीठ, देवघरक विशेष रूपें आभारी छियन्हि जे एहि पोथीक प्रूफ देखबाक समस्त काज सहर्ष अपनहिं कयलन्हि अछि आ एहि तरहें सन्तप्त कोसीबासीक प्रति अपन सुच्चा सहानुभूति एवं अभिरुचि देखओलन्हि।

- ब्रजेश्वर मल्लिक

मल्लिक सदन, बड़गांव
(मधेपुरा)

❖|❖

# भूमिका

हिमालयक छीपसँ खसैत-उठैत, पहाड़ ओ पाथरकें टुकड़ी-टुकड़ी करैत, नेपालक करेजकें थकुचैत, बिहारक वक्षस्थल पर हरबिड़रो मचबैत कोसी नदी गंगा में समाहित होइत अछि। शिखरतम ऊँचसँ निकसबाक ओजहें धार मे प्रवाह अछि, प्रवाह में धरफरैयनि अछि आ धरफरैयबाक क्रिया मे अप्रत्याशित त्वरितपन अछि। एकर प्रवाहक वेगमे सन्हिआयल तीव्रताक ओजहसं कोसीक धार साइत उनटैत-पुनटैत रहैत अछि। तैँ देखैत-देखैत घंटहुंमे, झपटि लैतहिं ई नदी कोसक कोस जमीनकें अपन आंचर तऽर दाबि लैत छैक। जतय सुरूजक पहिल किरिन महलओ उपवनकें अपन दुलार-मलारें प्रसन्नचित्त कऽ देने रहय ततय सुरूजक ओहय झलफलाइत किरिन महल ओ गाछीबोनक जलसमाधि पर झहरैत नोर संग विदा लैछ तथा जतय चानकेर सोहाओन पहिल दुधिया इजोत कोसीक छप-छप धारकेर संग भांति-भांतिक हंसी-ठट्ठा कयने रहय ओही चानकेर अन्तिम किरिन तप्पत बालुक पथार लागल ढ़ेरीकें छूबैत पीअर भऽ जाइछ। अजगुत अछि ई नदी आर अनटोटल थिक एकर गति।

कोसीक बसिन्दा लोकनिक जिनगी सेहो एहि अद्‌भुत नदीक आश्चर्यजनक गतिसं छेरल-छेकल छैक। कोसीक ताबड़तोर वेग, बरखाक घहरल उन्मत्त नदीक प्रचंड तोड़-तार उतरबरिया भागलपुर आओर पुबरिया दरभंगा कें छहोछीत कऽ देने अछि। किछुये समय पहिने जखन एहि नदीक प्रकोप एहि प्रान्तमे पसरल नहि रहय ताहि खन एकर प्रकोप अगवे पूर्णियां धरि छेकायल छल। एक

विद्वान, बिहारक गर्वनर लिखने रहथि जे ई प्रदेश सदति हंसैत-खिलखिलाइत उपवन थिक आ आइ इएह प्रदेशक करेजपर कोसी चण्डी बनि अनट-विनट कऽ रहलि अछि, राज्यक कचरमकूट भऽ गेल, सभ्यताक गोट-गोट चेन्हास-रेल, डाक, तार आदि विलैनी लऽ लेलक, कास-पटेर ओ 'पटपटी' धान तथा गहूमक खेतमे गत्तर-गत्तर पटोटन दऽ देलक मलेरिया एवं दरिद्रता एतुका सुख-शान्तिकें चांपि कऽ राखि देल। विषम परिस्थितिक झौहड़िमे पड़ि कोसीक बसिन्दाक प्राण औलांइत-बौआइत रहल आओर हुनक लोकनिक अपस्यांत अनुभूति गीतक माध्यमसं उच्छवासित भऽ कुहरि उठल। मुदा खखनल स्थितियो एहि अदम्य कोसीक बसिन्दा सभके मेंही-मेंही कूटि पीसि नहि सकल। ओ लोकनि दगधल-तबधल परिवेशहुंमे जीवि अपना माथ लिबय नहि दैत गेलाह, अपन अन्तसकें ढ़ाकन देने रहलाह। एतवे नहि, हुनक सभक उल्लास विपत्तिक पथरायल कतबइकें ढ़ाहि गीत लेल चास भूमि बिहुंसैत रहबाक खातिर आनि देलन्हि।

ई गीत प्रधानत: चारि कोटिक थिक:

(क) पूजा-गीत,

(ख) झझेर वा सोहाओन गीत,

(ग) झूमर-गीत आ

(घ) विभिन्न गीत

## पूजा गीत

बरखाक समय जखन कोसी विकराल भए जाइछ, कोसीवासीक प्राण कांपि उठैत छनि तखन ओ लोकनि कोसीकें बौंसबाक लेल, ओकर भयंकरताव. शान्ति लेल, कोसी नदीक पूजा-पाठ करैत जाइत छथि आओर ताहि अवसर-विशेष पर गाओल गीत पूजा-गीत कहबैत अछि। कोसीकें प्रसन्न करबाक हेतु लोक दूध-मधुर अर्पण करैछ आ 'पाठी' बलि प्रदान करैत छथि। लोक सभक धारणा थिक जे कोसी एहि पूजा-पाठ कर्मसँ अत्यधिक प्रसन्न होइत छथि। पूजा-गीतमे एहि बात सभक उल्लेख छैक। जखन क्यो मलाह अपन नाह कोसीक भयंकर धार मे खेबए आरम्भ करैत अछि तँ ओ सभसँ पहिने कोसीक पूजा करैत अछि

तकर उपरान्तहिं सों-सों करैत धार पर नाह छोड़ैत देरी उच्च स्वर में पूजा-गीतक राग केर आलाप कऽ, गीतक भास विमुक्त स्वरसँ गाबि अपन ताकत एवं साहस संगोरि ओ चतुर-चुश्त खेबैया नाहकें बांसक ऊंचाइ धरि उठैत तरंगक बीचो-बीचसँ, नदीक नीचां नुकायल टुटल गाछक फांकसं, अपन निपुण कला-कौशल हाथक संचालन द्वारा खेबि-खेबि गंतव्य धरि पहुंचैत अछि। धन्य छह तों हे खेबैया! जनिका कोसीसँ परिचय नहि छन्हि ओ जं एहि हृदयस्पर्शी दृश्य देखि लेताह तँ निश्चय भयाक्रान्त भऽ पड़ा जयताह। विकराल स्वरूप में तऽ एहि नदीक परतर क्यो नहि कऽ पाओत। जौं दुनियामे कोनहुं नदी एकर तुलना मे जोखल जा सकैछ तऽ ओ चीनकेर 'ह्वां-हो' नदिये थिक जकरा लोक चीनकेर दुःख (China's sorrow) कहैत छथि। कोसीक भयाक्रान्ततासं सताओल स्त्रिगण अपना सोहागक अहिवात बनौने रखबाक लेल तन्मय भऽ पूजा-गीत गबैत छथि।

## झझेर वा सोहाओन-गीत

'किछु सुख-किछु दुख, किछु इजोत-किछु अन्हार, किछु रौद-किछु छाहरि, किछु नोर-किछु मुस्की' इएह तऽ जीवन थिकैक। झझेर वा सोहाओन गीत मे कोसीक बसिन्दाक एहनहि जिनगीक सम्पूर्ण कथा-कहानी अछि। एक दिस विषम्यसं चोटायल लारु-बातु भेल जँ हुनक हृदय फानय लगैत छन्हि, आँखि नोरे डबडबायल रहैत छन्हि तखनहिं दोसर भाग अपन कलमुइयांक व्यथा बीछि अनबामे जे आनन्द छैक, जिनगीक उपर विजय पयबाक जे उन्मुनैनी छैक सएह तऽ हिनक सभक प्राणक आलोड़न हम सोहाओन-गीतमे पबैत छी। जे हुनका सभक जिनगीक उन्माद केर अखण्ड शतशः प्रवाह प्रतीक थिक। ई गीत अरबधि कऽ स्त्रिगणहिए द्वारा गाओल जाइछ। ओ लोकनि हेंज बान्हि गबैत जाइत छथि। जखन आकासमे दुधिआयल चान निहारि रहल होअय, जल-धार बिहुंसैत प्रवाहित होइत रहैत अछि, बसात नहुं-नहुं सिहकैत रहैत अछि तखनहि जनी-जातिसं लद-फद नाह पतियानीमे ससरैत रहैछ आर स्त्रिगण लोकनि अपन सुरम्यता सोहाओन-गीत रूपमे पसारि चकविदारक टघार सोहाओन-गीतमे बिसरि जयबाक कोशिश करैत जाइत छथि।

## झूमर-गीत

ई गीत निट्ठाह रूपें जनानीए गबैत छथि। झूमर एक विशेष प्रकारक उल्लासपूर्ण गायन थिक एवं एही गीतकें स्त्रिगण नाच' समय विह्वल भऽ एकरा गबैत जाइत छथि। एहि गीतमे हिनका लोकनिक जीवन क आत्मिक आह्लाद उमड़ि पड़ल अछि। रातुक फुलायल इजोरियामे जखन अकास दिससं पृथ्वी पर सुधा औंसल जाइत रहैछ, नदीसं निकसैत नहुं-नहुं बसातक हल्लुक-हल्लुक झोंका मे जखन देह-दिगहर ओकर मधुरायल स्पर्शें सिहरि-सिहरि उठैछ; कली-कोढ़ी क मुस्कानसँ जखन आत्माक पांखुड़ि फुलि अबैछ तखन यौवनोन्मत्त भऽ गौरवाहि स्त्री अपना आंगन-घरक चहारदेवारी नांघि जेना मद्मत्त भऽ बहराय पड़ैत छथि एवं प्राणक आहवान झूमर-गीतक रूपमे उझीलि वायु-मण्डलक कण-कण प्राणमय कऽ दैत जाइत छथि। एतय हिनका सभक छेकल-बान्हल प्राणक दुआरि फुजि गेल छन्हि, जिनगीक मधुरौंठ उतरचौन्हि कए लेलकन्हि अछि, बूझि पड़ैछ मोनक बन्हायल सोहाओन भाव उन्मुक्त रूपें निकलि पड़ल होइनि। रातुक अजगिग भेल स्वर्णिम पहरमे जखन युवतीगण झूमर पर झूमि-झूमि कऽ नाचि-नाचि वीणा विन्दित कण्ठसं गबैत छथि तखन कोसीक लपलपाइत लहरि सेहो हिनका सभकँ परतरबाक लेल उताहुल भए उठैछ।

## विभिन्न-गीत

ई गीत सभ अवसर विशेष पर गाओल नहि जाइछ। फुटकर गीत थिक। एहूमे कोसीक बसिन्दाक हृदयकेर सोझमति भाव उमड़ि पड़ल अछि आओर जखन-तखन एतूका लोक मस्ती-उमंग मे एहि कोटिक गीत गबैत छथि।

# कोसी-गीत ओ जीवन

एहि कोटिक गीतमे कोसीक बासिन्दा लोकनिक जीवन सजीव भऽ गेल अछि। एतय जिनगी दुःखहुं मे चेंगाइत रहल अछि। एतूका जनजीवन विपत्तिक पहाड़सं जा भिड़ैत अछि, मुहें भरे खसैत अछि, खसि पड़ला उत्तरहुं फेर ठाढ़ भऽ जाइछ आओर निस्तुकी करैत ओही पहाड़क छीप चढ़ि प्रफुल्लित होइत रहैत अछि। पराभवक अनवरत त्वंचाहंचक माझे-माझ हिनका लोकनिक जीवन-नाह

डोलि जाइछ, लहरिकेर प्रचंडता हिनका सभक साहसकें डेगे-डेग परतारय कियैक नहि चाहैत होअय, कराटक थाल-कादोमे दमि कइ नाह रह-हां अंटकियो जाइत छन्हि तैयो मस्तमौला खेबैया कोसी-गीतक मधुर स्वरक बीच आगां ससरैते जाइत अछि। कोनहुं वीर योद्धा जकां दुःख ओ विपत्तिसं सोझा-सोझीं युद्धरत। जठिआयल जिनगीक एहि खेदर-खादर घाटीसं दहाइत कोसीक बसिन्दाक जिनगी कोसी-गीतमे सौंसे-सौंस पैसिगेल अछि। प्रलयंकारी वाढ़ि, सों-सों करैत नदीक लहरि, तूफानक अबैया आदि पूजा-गीतमे समाहित अछि। कोसीक बसिन्दाक ईश्वर पर अटूट आस्था जे दुःखक निरूतर झुझुअएनियो मे जाठि बनल रहैछ। रसे-रसे तूफानक अफनैएनी थिर भइ जाइछ, अकासकें गछारल करिकबी मेघ उज्जर होमय लगैछ, समय मोहनिया भइ जाइछ आओर सोहाओन-गीतक माधुर्यसं वायुमण्डल गहे-गहे उतान लऽ लैछ। बसातक नान्हि-नान्हि झोंक लहरि पर ओड.ठैत, इतराइत नाह, नाह सवार लोकक कछमछैनीक बीचहुं हृदयसं निकसल मनमोहक गीत, ई सभ कोसीवासीक मधुरायल जीवनक विहान थिक। एतय एक आंखि व्यथासं डबडबायल रहैछ तऽ दोसर आंखि बिहुंसैत नोरक उद्भाव करैछ। नोरक दुनू बुन्न अनमोल थिक। तकर बाद झूमर-गीतक समय अबैत अछि। समय-सकाल पाबि दुनू बुन्न मलिनता हेठ करैत धप-धप चमकय लगैछ एवं प्रकृतिक महुरायल स्पर्श पाबि राग-विराग गलि कऽ प्रसन्नता ठोर पर आसीन भऽ जाइछ। दुःखित जीवनक दुर्लभ उल्लासक इएह क्षणसं झूमर-गीत सरावोर अछि। कतोक प्रकारक एहि गीत मे दैनिक जीवनक बहुमुखी प्रवृत्ति क हमरा सभकें फरिच्छ झांखी भेटैत अछि। गीतमे गमैया जिनगीक बड़ सुन्दर आ सहज चित्र अत्यन्त कुशलताक संग देखाओल गेल। बानगी स्वरूप एहने किछु दृश्य पर ध्यान देल जा सकैछ। नैहर जाइत काल बहीनक हृदयमे उठल भावक बड़ मनोरम विश्लेषण भेल अछि। नैहर जयबाक धड़फड़ीमे स्त्री अनुभव करय लगैत छथि जे ओ सत्ते नैहर लेल विदा भऽ गेलि। बाटमे कोसीक प्रबल धार भेटैत छन्हि। नाह बड़ बेसी निपुणतासं खेबैत रहितहुं डुबि जाइत अछि आ हुनक मृत्यु भऽ जाइत छन्हि। कल्पना आगां डेग उठबैत अछि तथा अपन सर-सरोकारी लोकनिकें मुइलाक हृदय विदारक समाद सुनि घटनोत्तर स्थितिक अनुमान करैछ। माय तें जखनहिं दुःखद जनतब सुनि लेतीह, लगले कोसी मे डुबि मरतीह। पिता ई सुनितहिं

भुंइया पर औंघरिया काटय लगताह। भाए सुनैत देरी हमरा छानि अनबाक लेल महाजाल पसारि देताह। भउजि तऽ ई जानि खुशीसं मोनहि-मोन नाचि उठतीह। एहि एकहि चित्रमे घरैया जिनगीक गहे-गहे सन्हिआयल पारस्परिक प्रेमक अपूर्व झांखी भेटैछ आ संगहि ननदि-भाउजक परम्परागत स्वाभाविक कटुताक आभास सेहो भेटैछ। सभसं पैध खूबी तऽ एहिगीतमे ई देखबामे अबैछ जे बहीन दिससं परिवारक सदस्य सभक प्रेम-परीक्षा लेल एक अद्‌भुत बनौआ सोचल सांचा गढ़ि लेल गेल। एहिना जिनगीक नित दिनुक घटना केर बड़ मनोरम समावेश एहि गीत सभमे भेल अछि। अन्तमे, एहि भू-भागक जनी-जातिक अद्वितीय सच्चरित्रताक नमूना देने बिनु ई परिचय वस्तुतः अपूर्णहिं रहि जायत। एहिमे तनिकहुं संदेह नहि जे एतय जिनगीमे स्वभाविकता छैक, स्वच्छन्दता छैक, एक 'छूट' भेटल रहलैक अछि जे साइत आजहु बीसम शताब्दीमे कतेको विकसित प्रगतिशील समुदाय आ समाजमे सेहो अंगनइ नहि धए सकल अछि, से थिकैक जनानीक हंसी-ठट्‌ठा, मजाक-मसखरि ओ चुहलबाजी। आ, एहि ईश्वर प्रदत्त सद्‌गुणमे एतुका स्त्रिगणक कोनहुं जोड़ नहि थिकन्हि। बेजोड़ थिकीह। तैयो, हंसोरपनि रहितहुं जड़-जनानीक चरित्रमे कतेक अपरिमेय बल सन्हिआयल अछि तकर अनुमान एहि उदाहरणसँ प्राप्त कयल जा सकैछ। एक बाध-बोनसं कोनो गमैया कन्या बरदक चरपाही कए माल-जाल संग घुरि रहलीह अछि। बाटमे नदी भेटैत छन्हि, सभक गाय-बरद हेलि कऽ कतबइमे ठाढ़ भऽ जाइछ मुदा ओ ज्ञातयौवना अपना वयसगत मुग्धताक अङड़ेनीमे अपन माल-मवेशी संग एकसरि बांचि जाइत छथि। सोहाओन सांझ, कोसीक मुस्काइत बसात आ लहरिक अधम-पुधमपर हिल-डुल करैत नाहकेर सवारी तथा ओही अपरूप चरवाहिनी सुन्दरी संग एक जुआन खेबैया। खेबनिहार छौंड़ीक रूप-सौन्दर्य पहिलहि नजरिमे निहारि अपना होश-इबास निमुन्न कए लैत अछि। जखन ओ खेबैयासं वरदसंग कतबइ धरि हेठ करबाक निहोरा-मिनती करैत छथि तइ खेबैया हुनक सांच मे गढ़ल गदरायल देहयष्टि (सांचले हे यौवन) दिस इशारा करैत इनाम पयबाक इच्छा व्यक्त करैत अछि। खेबैयाक भाव बुझि सुन्दरि तमसाइत लगले जबाव दैत छथिः

*'हमरो यौवन हे कोसी माय विष अंगोरल,*

*मलहा छुबैत मरि जेबे रे।'*

एहि एकहि पांतीमे नारी-चरित्रक परम उत्कर्ष झक-झका उठल अछि जे विपत्तिक घुरिआइत मेघहुंसं सेहो मलिन नहि होइत अछि। स्त्रीक आदर्श चरित्रक ई बानगी हुनका लोकनिक खाढ़ी दर खाढ़ी पुरनाह सभ्यताक उपाति अछि जाहि भरें हिनक सभक समूचा जिनगी उचकुन लगौने रहैत आयल अछि। संगहिं एहि गीतक अन्तिम पांतीमे जाहि अनुपम कवित्व सौंन्दर्यक रसास्वादन हम करैत छी, सेहो वर्णनातीत अछि।

## कोसी-गीत ओ किंवदन्ती

कोसी-गीतसं जुड़ल कतेको जनश्रुति छप-छप करैत मनोरंजनसं परिप्लावित अछि आ एकर उल्लेख कोसी-गीतमे ढ़ाकीक ढ़ाकी भेल छैक। किंवदन्ती जाति-विशेषक भावप्रवणताक धूआ होइत अछि आओर कोनहु घटना किंवा स्थानक चिन्हासक रंग-ढ़बक भीतपर ओंगठल रहैछ। एहि किंवदन्तीक अध्ययनोपरान्त जनतब भेटैछ जे कोसीक बसिन्दा सभक मगज अगबे उपजैनीएक सक्षमता नहि जोगौने रहल अछि; ओहीमे जीवन्तता पैसल अछि, धुरखेल पैसल अछि, आओर पैसल अछि दुःख एवं मुसीबत डेंगा देबाक अनदेखल दुः-साहस। कोसी-गीतमे जाहि किंवदन्तीक पेना-पेनी भेलैक अछि तकर आधार भनहिं वास्तविकताक खरंजापर रगड़ैत-रगड़ैत नोकगर, थेहगर ओ जोखगर नहि बहरायल होअय मुदा एतबा धरि सत्य अवश्य अछि जे एहिमे कोनहु घटना किंवा जगहक आश्रय लय कऽ महीनसं महीन भावमे अन्तर्निहित भावकें मनः स्थितिक विलक्षण निदर्शन भेल अछि। दृष्टान्त स्वरूप गीत संख्या-13 कें देखल जा सकैछ। जनश्रुति थिक जे जखन कोसी हिमालयक हरियर बोनखण्डमे प्राकृतिक सुषुमाक बीच पोसि-पालि समर्थ भेलि तँ एक दिन ओकरा स्वयं यौवनवती भऽ जयबाक भान भेल। ओ अंगैठी-तैत कुसुमवृन्त संग झिका-तिरीं करय लगलीह। समय सोहाओन रहय। रम्य प्राकृतिक एकसरूआ पहर रहैक। उमतल बसातक झुलम-झूल प्रकृतिक आंचरमे सुगन्ध पसारि देने रहय, उत्फुल्लमय दिशा मदान्ध भऽ गेल छल। अनमन एहिनहिं बेला मे एक दुर्दम राकस आबि पहुँचल छल। उद्दीपनक चरम सीमामे राकस कोसीक मनोविमुग्धकारी रूपलावण्य देखि मोन-प्राण बन्हक रखि देलक। अपना आतुर भाव-प्रवाहकें ओ थाहि नहि सकल। ओ कोसीक नाम- ठेकान पुछलक। ओ, लगले बियाह करबाक मोनक

बात सोझां राखि देल। कोसी एहि अप्रत्याशित विपत्ति देखि घबराय गेलि मुदा तखनहिं अपन थतमतायल भावपर झांपनि दैत कुटिल मुसकान उझिलैत कहलनि; हमरा बियाह करबासँ तँ इंकार एकदम्मे नहि अछि परंच हमरो एक प्रतिज्ञा थिक, जे वीर एकहि रातिमे हिमालयसँ लऽकए गंगा धरि बान्ह बान्हि देताह आ तकर दुनू कात पोखरि खुनि सकताह तनिकहि गरामे मह-मह करैत माला पहिरयबन्हि। जौं क्यो एहि काजक बहैनी उठबैत गंतव्य धरि पहुंचि नहि पओताह तँ हुनक जान छोपि लेबन्हि। राकसक लोभायल ओ उफनैत आवेग, पौरुषक मिथ्याभिमान सोचि-विचारक प्रयोजनो नहि बुझि लगले स्वीकृति दैत काजमे जी-जानसं भिड़ि गेल। राकसकें काजमे जेना-जेना सफलता भेटैत जाइत रहय, कोसी तेना-तेना विक्षिप्त होमय लगलीह। ओ दौगि कइ महादेवक सोझां अयलि आ कौमार्य भंग एवं राकस सहवासक संभावित दुःख-दारुण्य सुनौलन्हि। महादेव तऽ सत्ते आशुतोष थिकाह। तत्क्षण दयामय भऽ गेलाह। अपनहिं मुर्गाक रूप धारण कइ असमयहि राकसक चारु भर बांग देमय लगलाह। जखनहिं राकस मुर्गाक बांग सुनलक, ओ अप्रतिभ भऽ गेल। ओकरा भय सतबय लगलैक जे जखने विहान होयत, प्राण हरण कऽ लेल जायत, ई सोचि ओ लंक लऽ पड़ा गेल। कोसीक प्रसन्नता सैंतायल नहि रहल। ओ आनन्द विभोर भऽ गेलि, शिकार करय लगलि, मयूरक बध कऽ देलि जाहिसं मयूर सभ किलोल करय लागल। मुदा कोसीक उपर एहि आर्त्तनादक तनिकहुं प्रभाव नहि पड़लनि। जखन कोसीक आदेशानुसार सभ मयूर भरि राति नचि-नाचि प्रसन्न भऽ अहल भोरमे हुनक प्रिय मुर्गाक आवाज सुनौलकन्हि तखन कोसी आह्लादित भऽ मुइल समस्त मुर्गाकेँ जीवित कए देलन्हि। सभ मयूर आनन्दमग्न भऽ कोसी संग समवेत स्वरमे मुर्गाक बांगक उच्चारण करय लागल। एहि घटनाक अत्यन्त मर्मस्पर्शी वर्णन गीतमे भेल अछि। कहल जाइछ जे नेपाल तराइक वीरवान्ह आजहुं अवस्थित अछि जकर निर्माण ओहय राकस कयने रहय। एहि बान्हक अंश आजहुं सुपौलक अन्तर्गत शिवनगर बाजार छुबि अपन पसार कयने छैक। एकरहि लगीच मे धपहर परगनामे अवस्थित एक पोखरि 'मयूरनी खत्ता' नामसं प्रसिद्ध अछि। जकर विषयगत जनश्रुति अछि जे कोसी द्वारा इएह पोखरिमे (जकरा राकस दिससं खुनल गेल छल) मयूर सभक प्राणान्त कऽ संगोरल गेल आ पछाति मयूरेक आग्रह पर प्राण घुरा आनल गेल रहय।

एक कथानुसार कोसी कुमारि छथि। कौमार्यमे तं चंचलता रहितहिं अछि तें कोसी जतय कतहु जाइत छथि, तीव्र गतिएं बहैत छथि; कोसीक इएह यौवन-प्रमत्त प्रवाहक भयंकरता देखि कऽ लोक हुनका बौंसयबाक लेल पाठी ओ दूध अर्पण करैत जाइत छथि तथा एहि श्रद्धा-भक्तिक अछैतो जौ किनसिआइत कोसीक प्रचण्ड प्रवाह थम्हि नहि पबैछ तखन मन्हुआयल लोक हुनक अपमानक ध्येयसं पाठीक बदला कुकुर आओर दूधक पर्याय मे सिन्नूरक चढ़ौना दैत छथि। लोक धारणा छैक जे कोसी हुनका सभकें कुकुर जकां मृत्यु दैछ किंवा हुनका लोकनिक अपूर्व साहस एवं आत्मबलकें, जकर महात्म्य थिक जे दु:खकें लोहरयबामे तनिकहुं आगां-पाछां नहि होइछ अपन सेनामे भरती कऽ लैत छथि।

ईहो कहनिहार थिकाह जे कोसी बियाहलि छथि आ हिनक बियाह मधेपुरा सब-डिविजन (सम्प्रति जिला-सम्पादक) क अधीनस्थ सिंहेश्वर स्थानक महादेव संग भेल छनि। तें जनआस्था छैक जे एतेक नम्हर अवधि धरि मधेपुरा सब-डिविजनमे अविरल बहैत रहितहुं कखनहुं-कहियो सिंहेश्वर मन्दिर दिस घुरियो कऽ नहि देखलनि। सिंहेश्वर बस्ती ओ मधेपुरा सब-डिविजनक अनगिनत टोल-गामक लोक आर्त्त भऽ सिंहेश्वर-महादेवसं गोहारि करैत जाइत छथि जे कोसीक ओजहें हुनका सभक कष्ट कखनहुं थम्हैत नहि छनि मुदा के सुनैत छनि प्रार्थना! कोसीक गदहपचीसी तँ तनिकहुं थम्हि नहि पओलन्हि, उन्टे चैनकुट्टी बनि सिंहेश्वर मन्दिर दिस आबय जखने लगलीह कि महादेवकें बुझबामे लगले अयलनि जे हुनक कनियां केहन सुलक्षणा थिकीह! जखन महादेव कोसीक एहन सपरतीव आचारण देखलनि तऽ बड़ व्यथित भेलाह ओ कोसीं कँ बैलाय देलनि। एहि तरहें परित्यक्ता कोसी पच्छिम दिशामे कनैत-कनैत चलि गेलि तथा खौंझायलि-तमसायलि कोसी मधेपुरा एवं सुपौल सब-डिविजनक शस्य-श्यामला उर्वर भूमि आ 'पंचमहला' क नन्दन-काननकें कोना बिलटौलन्हि तकर करुण दशाक सजीव चित्र गीत संख्या 39 में चित्रित भेल अछि।

## कोसी-गीत आ काव्य

कोसी-गीत स्वमेव एहि जुगूनक बसिन्दा सभक संतप्त आंखिसँ नोर बनि बहरायल अछि। हृदयक क्षोभसँ निकसलि एहि गीतकें पढ़ैत देरी अनायास

सुमित्रानन्दन पंतक ई पांती मोन पड़ि जाइछ -

*'वियोगी होगा पहला कवि*

*आह से उपजा होगा गान*

*उमड़कर आंखों से चुपचाप*

*बही होगी कविता अनुजान।'*

महाकवि शेलीक कहब छनि जे हमर मधुरतम गीत वैए थिक जाहिमे करुणतम भाव गहे-गहे होइक (Our sweetest songs are those that tell of saddest thought)। एहि गीत सभमे विदग्ध हृदयक आकुल भाव उमड़ि पड़ल अछि। संस्कृत विद्वान सेहो लिखने छथि 'रसात्मकं वाक्यम् काव्यम्' रसमे करुणरस सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयने अछि आ कोसी-गीत करुण रससँ ओत-प्रोत थिक।

महाकवि वर्डसवर्थ लिखने छथि जे अन्तः प्रेरणा सँ बहरायल प्रभावपूर्ण अनुभूति कविता थिक (Poetry is sportaneous over flow of powerful feelings.) कोसी-गीत एहि कसौटी पर उबओलाउत्तर सोरहन्नी सही निकलैत अछि। मोनक उजाहि उठल; गाबि देलहुं आ फेर वैए गीत लोक सभ कोसी-गीत कहि देलनि। अभिप्राय जे हृदयमे स्वाभाविक उमंग-प्रेरणाक आविर्भावसँ कोसी-गीतक सृष्टि भेल अछि। स्वाभाविक रूपें कोसी-गीतमे भाव सहज-सरल रूपमे उमड़ि पड़ल अछि भावकेर सत्यता कारणें ओकर व्यंजना एतेक मार्मिक भेल जे भावकेर अनुभव सहजहिं भ' जाइछ। कोसी-गीत पढ़बाक उपरान्त हम कोसीक बसिन्दाक बड़ लगीच चलि अबैत छियन्हि तथा हुनका लोकनिक जिनगीक कैक अन्तः विरोधी चित्रक दर्शन क' लैत छी। भनहिं 'पिंगलशास्त्र' क पण्डित एहिमे किंवा कोनो जन गीत में छन्द आ मात्राक बन्धन नहि पाबि एकरा कविता जुनि मानथु। मुदा तुकबन्दी लेल छन्द आ मात्राक अनुशासन भनहि अनिवार्य होअय, कविताक निमित्त त' किन्नहुं नहि। निरालाक शब्द मे -

'भावकेर मुक्ति छन्दहुक मुक्ति चाहैत अछि। एतय भाषा, भाव ओ छन्द तीनहु स्वतंत्र थिक। मनुक्खक मुक्ति कर्म बन्धनसं विमुक्ति पायब थिकैक आ कविताक मुक्ति छन्दकेर अनुशासनसं विलग होयब थिक।'

अत: पिंगलशास्त्रकेर विद्वान ओ पुरनाह लकीर-फकीर भनहिं कोसी-गीतकें काव्यक अन्तर्गत स्नान नहि दैत जाथु किंवा निकृष्ट स्थान निर्धारित करथि मुदा सुच्चा कलाकार कोसीक बसिन्दा लोकनिक एहि अल्हड़ कारुणिक तानमे एहन अनुपम चीज पओताह जे साइत बड़ थोड़ उच्च कोटिक कवितामे निहित रहैत अछि। कहल जाइछ जे जादू त' ओ थिक जे माथ चढ़ि बाजय। हमर विचारें कविता वैह थिक जे थुरायल-पीचल आत्माक पीड़ाकें दोसर धरि पहुंचा दैछ। कोसीगीत पढ़बाक उपरान्त जिनगीक व्यथा मुखरित भइ उठैत अछि। तैयो ध्यान देबाक बात थिक जे असहनीय व्यथा भारक कारणें हिनका सभक जिनगी बोझिल रहितहुं हिनक गीतमे रोरक धार नहि बहैत रहैत अछि अपितु सुननिहारक आंखिक बुन्न अपना भरिगर प्रभाव दैत छैक। एहि दृष्टिकोणें कतेको कोसी-गीतक तुलना उत्तम कविताक संग सगर्व कयल जा सकैत अछि। वर्डसवर्थ आ शेक्सपिअरक महत्व एही कारणें छनि जे मात्र एक बुन्न नोर किंवा एक सेरायल हाफीक माध्यमसँ हुनक हृदय मे संचरित नोर केर अंटकर लगा लैत छथि। कोसीक बसिन्दाक मातृभाषाक भाषामे रचित होयबाक कारणसं भावकेर व्यंजना अपेक्षाकृत बढ़ि गेल अछि तथा गीतमे एक सरल सरलता सन्निहित भ' गेल अछि। काव्यक मधुरतम प्रवाहमे हमरा भाषाक सरलता तनिकहुं विचलित होयबाक भान नहि करबैत अछि वरन गायनक संगहि-संग वाद्यक समां बान्हि अनैत अछि। ई गीत गमैया लोक सभक अपन 'पिंगल प्रबन्ध' ओ अपन खास 'सिद्धांत-कौमुदी' क सिद्धांत आधार परहिं रचल-विरचल छनि आओर हिनका सभक एहि शास्त्रक रचना क्रिया नित दिन उन्मुक्त वातावरण मध्य सांझ क बेर कतेको संख्यामे होइत रहैत अछि। हिनक भाषाक कनतोड़ि बिनु बन्हनक थिकन्हि। आन विन्यास जकां प्राय: शब्द-विन्यासमे सेहो उदासहि रहि जाइत छनि। गांथ मोटगर होअय कि पातर, मात्र टुटि नहि पाबय।

'भाषा कोऊ होय भाव अपरुव होयबाक चाहिऐक' ताहि सिद्धान्तक एतय सर्वथा प्रतिपादन भेल अछि। एहि दृष्टिएं भाषाक उपर साहित्यिक दृष्टिकोणसं विचार करब किन्नहुं न्यायसंगत नहि होयत। एतवे नहि, ईहो तइ स्वीकार कयल जा चुकल अछि जे कोनहुं समृद्ध भाषाक जन्मभूमि पहिले-पहिल गामहि थिक। अत: एहि गीत सभमे शब्दालंकार रचना सौष्ठव, वाक्य विन्यास ओ सानुप्रास भाषाक सौन्दर्यक अभाव देखि भनहिं कविताक किछु पक्षधर

निराश भ' जाइत होथि मुदा कविताक खांटी रसास्वादनकर्त्ता चतुरी जौहरी जकां चेथरीमे नुकायल मणिकें निश्चय चीन्हि जयताह। एहि गीत मे अभिव्यंजन कलाक विशिष्ट्यता नहि रहल होअय परंच मार्मिक अनुभूतिक ततेक आकर्षक विश्लेषण कयल गेल अछि जे पाठकक हृदय विलासपूर्ण भावें आलोड़ित भइ जाइछ। भादो मास रहय। बरखा में कोसी विकराल रूप धयने छैक। हम कोसीक कछेर स्थित एक टोलमे बैसल छलहुं आ अंटकर लगबैत रहलहुं एकर भयंकरताक। तखनहिं दू गाय आ एक बाछा हंकैत एक ननकिरबी कास तथा झौआक झोंझड़ि द' कइ बहराइत अछि। सांझ भ' गेल रहय। माल-जाल नहुं-नहुं गाम दिस चलल जा रहल छल आ ओ अबोध ननकिरबी पेना धयने करुण रागक आलाप करैत मवेशीक पाछां-पाछां निमग्न भेल बढ़ैत जा रहल छलि। ओ गबैत जाइत छलि:

*'सगरे समैया कोसिका हंसि-खेलि बीतोलियै से भदव मासे*

*कोसी माय लगै छै पहाड़-से भादव मासे*

*एक ते अन्हार राती, दोसर बसात घाती सूझै नाहीं*

*मैया गे रेत के बहाव से सूझै नाहीं*

*मलरि मलरि कोसिका करै अनघोल से नदी बीचे*

*कोसी माय मन डरपाय से नदी बीचे।'*

हमर मोन-प्राण ओहि कन्याक करुण गीत केर माधुर्यमे डुबि गेल रहय आ ओ निरन्तर गबैत जा रहल छलि:

*'फाटल नयेरिया कोसिका गुन पतवार से टुटी गेलै*

*मैया गे लागहु गोहारि से दया करु।'*

आओर हम विभोर भइ गेलहुं। केहन करुण भावुकता छैक। आ, ओ एक परदेसी सं बेपरवाह भेलि गबैत जा रहल छलि:

*'गोड़ लागौं पैयां पड़ौं मैया सतवंती से राखि लेहु*

*मैया गे हमर सोहाग से रखि लेहु।'*

मवेशी चलि गेल, गायबनिहारि चलि गेलि, गायन चलि गेल तैयो हम
हृदय ओहि करुण रससं आप्लावित रहय। गति, लय, संगीत आ मृदुलता
सानल ओहि विह्वल भावकेर करुण-स्मृतिसं हृदय तंत्री एखनहुं झन-झन
रहल अछि। जिनगीक अन्तः स्तरक पोर-पोर छूबैत भावक एहि विकल ध
सोझी छन्द तथा मात्रा से बान्ह उत्तम कविताओ पाछां रहि जायत।

एक बानगी आरो लिअ। हम कोसी पीड़ित इलाका में रिलीफ
वितरणक्रम मे नाह पर बैसि जा रहल छलहुं। बाटमे एक गाम आयल। न
कतबइक एहि गामक जुआन छौंड़ी भक गैन। ओलोकनि गाबि रहल छलि त
हुनका सभक करुणरागिनी बसातक लटकुन भेल छलः

*'कथी ले रोपलियै कोसी माय आमुन जामुन गछिया हे*

*कथी ले रोपलियै बीट बांस*

*कथी ले बढ़ेलियै कोसी मां नामी नामी कोशिआ हे*

*कथी ले केलियै सिंगार हे।'*

आओर हृदयमे उमड़ैत सुकुमार उमंगक उतारा ओ अपनहिं दइ रह
छलिः

*'खाय ले रोपलियै आमुन जामुन गछिया हे*

*जूड़ा ले बढ़ेलियै नामी-नामी केश*

*छैला ले केलियै सिंगार।'*

*तकर उपरान्त तइ रागक स्वर आरो करुण होइते गेलः*

*'खाइयो ने भेलै आमुन जामुन फलवा हे*

*बान्हियो ने भेलै नामी नामी केश।'*

ई सुनितहिं हमर आंखिक सोझी ओही बस्तीमे रोपल आम ओ जामुन
गाछ केर पतियानी उसरि आयल। सहस्त्रहु अरमानक संग, सौखसं रोपल गाछ
उपर कोसी दिससं कयल उत्पात वर्णनातीत थिक। किछु गाछ तइ कोसी
धसानमे धंसि गेल रहय, किछु डुबि गेल रहय आ जे थोड़ बहुत बांचल ठा

रहय सेहो कोसीक डांगसं सुखा गेल छल। आकांक्षाक एही भांगल-पीटल भग्नावशेष हृदयमे थर-थरी उत्पन्न क' रहल छल। जिनगी बीतयवा मे व्यस्त अपन पतिक विरहसं तिलमिलाइत स्त्रिगण अपन केश सेहो सम्हारि नहि सकैत छलि जखन ओ अन्तिम पांती गाबि रहल छलि:
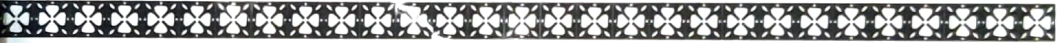
*'बन्हियो ने भेलै नामी नामी केश के जुड़बा*

*मोगल भेटै जीवकाल हे कोसी माय।'*

ई सुनि हमर आंखि नोरहिं डबोडब भइ गेल। हुनक सभक दुःख सीमाहीन छल। एक दिस घर-आंगन बिलटि गेलन्हि, हंसैत-झूमैत खेत-खरिहान, बाध-बोन, गाछी-बिरछी कोसीक कारणें विनष्ट भइ गेलन्हि, पति वा तं परलोकवासी भइ गेलाह नहि तं मलेरियासं ग्रसित बेसुध बिछान धयने छथि। पति रोजी-रोटी खातिर गाम आ कि नगर बौआ रहलाह अछि। दोसर दिस कर्ज बढ़िए रहल छनि। एहन कुसमयमे महाजन, हड्डीक न्योंपर भीत ठाढ़ कय-निहार महाजन 'मोगल'क रुपमे उपस्थित होइत आ 'शयलोक' जकां एक 'पौण्ड' मासुटाए नहि 'इज्जति' लेमयपर तुलि जाइत अछि। केहन करुण छल ओ दृश्य।

**- ब्रजेश्वर मल्लिक**

# कोसी-गीत

# पूजा-गीत

(1)

कथी बिनु कोसी मुंह मलिन भेलौ
कथी बिनु गुरमै शरीर।
पान बिनु मुंहमा मलिन भेलै सेवक
मधु बिनु गुरमे शरीर।
पनमा जे खेलिये सेवक, मुंहमा रंगेलियै हो,
लडु बिनु गुरमै शरीर।
लडुआ जे देले मलहा हृदय जुड़ाएल,
पाठी बिनु डोलैये शरीर। रौ पाठी.....

कर जोड़ि मिनती करै छी मैया कोसिके
देवौ गे माता पाठी देवां भोगार।
बेरिया परले कोसी माय कोई न गौ गोहारि,
तहु न माय होइयो न सहाय,
गौ गरुआ के बेरि।
गावल सेवक जन दुअ कर जोड़ि
गरु वेर होउ ने सहाय।

(2)

सब के बरदिया कोसीमाय अमरपुर पहुंचल
हमरो बरदिया ऊसर मे लोटाय।
सब कोय बनीजल कोसीमाय पाकल बीड़ा पान,
हमहुँ बनिजबै कोशीमाय लंग अड़ांची।
जब तोरा आहे बेपरिया पार देबौ उतारि
बेपरिया किय देब दान।
घाटे वाटे चढेबौ कोसीमाय हसाना बीड़ा पान
घरे घरे छौकी ज्योनार।
घरही जे जेबे सहुआ, सहुनिया बुधि रचवै

बिसरि जेबे कोसिका नाम।
जीबो मोरा जेतै कोसीमाय परानो किछु गे बचतै
तियो ते बिसरवौ तोर नाम।

( 3 )

माझे-माझे दियरा परिये गेल
लागि गेल कमला फूल।
नान्ही नान्ही डलिया बुनाबिहे छौड़ी मलिनिया,
तोड़िलीहे कमला फूल।
कोन फूल ओढ़न कोन फूल पहिरन
कोन फू हे सिंगार।
एली फूल ओढ़न, बेली फूल पहिरन,
चमेली फूल कोसिका के हे सिंगार।

( 4 )

सगरे समैया सुरी मां सुति बैसि गमावलि
भादव सुरी मां साजलि बरात हे, भादव मास।
जब हम हे कोसी मां साजलौं बरिया,
तोरा लय कोसी तैयार छलै पाटी अरु लरुआ मिठाई
हे तोरा लय।।
घुरे घुरे कोसीमां सन्देश देवै चढ़ाय
हे तोरा लय।।
जब हम पहुंचलं नदिया किनरवा
होबे लागल तोरे बोलहाई है।
सन सन केसिया हे कोसीमाय तोहर अंखिया डरावन
पार करु पार करु तोंही बूढ़ी हे मां।
हरै हेतै घर मे सासु
कतहुं न देखै छिये घर में सलहेस के उपाय
अहि पार देवौ कोसी मां दूध देबौं ढार।
खन नैया खेबे खन नैया भसियावै

केना हेतै सुरि मां के विवाह।
अहि पार देबौ मलहा कान दूनू सोनमा,
पार भेले गला गिरिमहार
तोहर सोनमां कोसी मां तोहरे भावे
हुकुमे देवै सुर मां के पार उतारि।

( 5 )

गाम गाम धुपवा दियैले मां कोसिका,
मां तोरा नहीं माया दरेग,
बाजे लागल बिछिया अनोर।
डेढ़ी डेढ़ी नैया गे कोसिका
घाट घाट चढ़ेलौं रोरिया
बाजे लागल बिछिया अनोर
धारे धारे चढ़ेबौ गे कोसिका
थार थार मिठइया,
बाजे लागल बिछिया अनोर।

( 6 )

उत्तरहि राज से ऐले एक मोगलबा,
बान्हि जे देलकै कमलाजी के धार।
एहेन बान्ह जे बान्हल तों ही रे मोगलवा
सिकियो ने झझावे मोगला के बान्ह।
हिन्दुओ नै बूझै मोगला, तुर्की नै बूझै
सब से चेकरी दुआंवे।
राज शिवसिंह बैठल छलै मचोलवा,
तकरो से चेकरी दुआवे।
ऐसन बान्ह बान्हलक मोगलवा,
सीकियो ने झझावै मोगलाक बान्ह।
कानि कानि चिट्ठी लिखै माता कमला,

दहुन गे गंगा बहिनो हाथ।
गंगा बहिनो चिट्ठी लिखै माता कमला,
दहुन गे यमुना बहिनो हाथ।
चिट्ठी पढ़ैत यमुना बहिनो माटी भीजि गेलै
हमरो सब न टूटतै मोगलाक बान्ह।
कानि कानि चिट्ठी लिखैय माता कमला
दहुन गे कोसिका बहिनो हाथ।
कोसिका बहिनो चिट्ठी पढ़ैत सोचै जे लागलै
हमसे सक नै टूटतै मोगलाक बान्ह।
एहेन वामी-माछ बनवैये बहिलो कमला
फोड़ करै जे मोगलाक बान्ह।
फोड़ करैत कोसी हुलि देल कै,
केलकै सम्मुख धार।
गावल सेवक माता दुहु कलजोड़ि
जुग-जुग जपब तोहर नाम।
राजा शिवसिंह चरन नमावे,
मैया हे धनि धनि तोहर प्रभाव।
तोरा देबौ कमला जोड़-जोड़ पाठी,
कोहला के पाहुल चढ़ाय।
गावल सेवक माता दुहु कल जोड़ि
युग युग जपव तोहर नाम।

(7)

नदी देखों नदी देखो नदी तिलजुगबा, कोसी गो देखि
मैया जीवो थर थर कापै, कोसी गो देवी।
सगरे समैया कोसी माय उठि बैटि गमैलियै-गे मैया भादो मासे
साजले बारात कोसी मैया गे देवी।
जब तहँ आहे कोसिका सलहेस देखले आबैत
घाटे-घाटे, नैया राखले छपाय, कोसी गो देवी।

जब तहँ आहे कोसिका नैया छपैले
हाथी चढ़ि मैया उतरब पार कोसी गो देवी।
जब तहँ आरे सूड़िया हाथी चढ़ि उतरबे
माझे धारे-हाथी देबौ डुबाय माझे धारे।
जब तहँ आहे कोशिका हाथी बूड़ैब
सीरा मे बान्ह देवौ बन्हाय मैया कोसी गे देवी।
जब तहँ आरे सूड़िया-बान्ह बन्हैब
तोड़िके-सम्मुख धार देबौ बनाय। मै.
घाट-बाट चढ़ेबो मैया दशोनहा पान,
घर गेने-देबौ पाटी कटाय।
बेर तोरा बरलौ लाखे लाख कबूलबै
घरे गेने जेबै बिसराय। मैया कोसी गे देवी।
जानो मोरा जेतै मैया, प्रानो तन हततै,
तैयो न बिसरब तोर नाम।
तोही जितले मैया, हमे हारलौं,
दे मैया पार उतारि। मैया कोसी गो देवी।

( 8 )

कहमा बहै मैया कमलेश्वरी, कहमा बहै माता कोसिका।
आलापूर बहै माता कमलेश्वररी, तिरहुत बहै माता कोसिका
दया करु माया करु कोसिका माय, चंडालिनी
नगरक लोग करे छै किलोल।

( 9 )

आठहि काठ के नैया बनाओल
हिंगुर रंगल दोनो मांगि।
लाबू-लाबू झिमला मलहा रे नैया
खेबि कब उतरब पार।

कुछ नैया चललै, कुछ भसियैलै
कुछ बुड़लै आधहि धार,
धरम के नैया पार उतरि गेल,
पापक नैया बुड़ल मझधार।

( 10 )

कमला जे पुछथिन सुनू बहिनों कोसिका हे
केहेन छथिन रानू सरदार हे।
भैंस सनक मनुसबा गे बहिनों बजर सन गाते हे
मोंछ रानू बहिंगा सन सन आबे हे।
कोसिका जे पूछै छथिन सुनू बहिन कमला गे,
केहन हथिन कोहला देब आबे हे।
तारे सन मनुसबा गे बहिनो, बजर सन गाते हे
मोंछ भमरा गुलजार हे।
डांड़हु के लचपच छै कोहला, सीनहू के चाकर हे
मोछ भमरा गुलजार हे।
खुटवा जे गाढ़ल कोहला, झझिया जे पसारल हे
भीत चढ़ि भै गेल ठाढ़ हे।
उत्तरहि राज से विधाता नैया एक आवे हे
हिंगुरा जोड़ दुहू मांग हे।
साहुओ ने छियै विधाता, महाजनो ने छियै हो,
बिनु रे खेवैया नैया आबे हे।
घड़ी एक चलिऐ विधातापहर पंथ बितलै हो,
बारी काना नैया लागल आबे हे।
कहां गेल किअ भेल बाबू रनपाल हो
वारी काना नैया लागल आबे हे।
कहां गेल किअ भेल बाबू रनपाल हो
वारी काना दीऔ ने छोड़ाय हे।
गोटा गोटी विधाता, खुटबा उखाड़े हो

कोहला गाड़ल खुटबो नै हिलै हो।
कहा गेल किअ भेल बाबू वरीबरबा हो
बारी काना दियौ ने छोड़ाय हे।
किअ तुहुं छिही गे बुढ़िया दैतनी जे भूतनी गे
निसिभाग राति पाड़ै छही डाक गे।
नही मि छियै बेरीबरवा दैतनी जे भूतनी रे
नहि हम भूतनी पिसाच रे।
जाति के जे छिकियै बेरीबरवा ब्राह्मण-बेटी रे
हमर लोक धरलक कोसिका नाम रे।
जब तुहँ पुछले बेरीबरवा जाति के ठेकान रे
कहि देहो आपनो नाम ठेकान रे।
जाति के जे छियै माय कमला, जाति के मलाह रे
माय बाप राखलक कोहला काम हे।
पहिलुक पूजा बीर कोहला, तोहरे देवौ हे
चलू कोहला हमर साथ हे।
मायं हमर आन्हरि माय कोसिका, बाप काया कोढ़ी हो
कोना जेबौ तोहर संग साथ हे।
माय के आंखि देबौ, बाप के काया देबौ बनाय
चलू कोहला हमर संग साथ हे
गोड़ तोरा लागै छी माय कोसिका दुहु कर जोड़ि हे
गरू बेरा होहुने सहाय हे।

( 11 )

कहमा नहैले कोसिका कहां लट झारले गे,
कहमा केले गे कोसीमाय सिंगार।
सोहरा नहैलों सेवक बाटे लट हो झारलौं,
गहबर केलौं सोलहो सिंगार।
कथी बिनु कोसीमाय मुहमा मालिन भेलौ,
कथी बिनु डोलै हे सरीर।

पान बिनु ओहो सेवक मुंहमा मलिन भेलै,
मधुर ले डोलै ये सरीर।
देबौ गे कोसी माय खीर पान भोजन,
पाठी देबौ कोसीमाय चढ़ाय।
गावल सेवक जन दुहु कल जोड़ि
गरूआ के बेरी गो कोसीमाय होहु ने सहाय।

**( 12 )**

गोर तोरा लागै छियौ हो डिहबार,
गरूबेरा कोसीमाय के दियौ ने मनाय।
घड़ी एक चलबे कोसीमाय, पहर गो बीति गेलौ,
बेरिया परल छैक, कोई ने लागै छै गोहरि।
चारो भर छैक राजा के सरने सिपाही बीचहि ठाम परल बन्हसार
बुढ़िया सरूप से गेलै माता कोसिका,
चार मारि के राज के देलकै जगाय॥
केओ तुही थिकही बुढ़िया पृतनी कि भूतनी,
निसि भाग रति के देलही जगाय।

ना हम छियै राजा दैतनी ओ भूतनी, ना हम छियै मानवे
हमहुं जे छियैक राजा जाति के जे ब्राह्मण,
हमरो लोक धैलकै कोसिका नाम।

जब तोरा बेरिया बढ़ैब राजा सोतिम,
हमरा के किअ देब इनाम।
जब हमरा बेरिया बढ़ैब माता कोसिका,
जोड़-जोड़ा पाइी देबौ भोजन।
गावल सेवक जन दुहु कल जोड़ि
गरूबेर होहु न सहाय।

( 13 )

झांझहि कुकुरबा कोसीमाय संग लेले लगाय
गौ मैया चलि भेलै उत्तरखंड शिकार।
जाहि बन कोसीमाय सिकिये ने छोलै
ताहि बन कोसीमाय खेलै छै शिकार।
हरिनो ने मारै कोसीमाय खरिहो ने मारै कोसीमाय
बीछी-बीछी कोसीमाय मारै छै मजूर।
हकन कानै ये कोसीमाय बन के मजूरनी,
बारी बेस हरले सिन्दूर।
नै हम खेलियौ कोसीमाय खेत खलिहनियां,
नै हम केलियौ लक्ष अपराध।
बखसु बखसियो कोसीमाय सिर के सिन्दुरिया,
मैया बखसि दियौ सिर के सिन्दूर।
जब तोरा बखसबौ सिर के सिन्दुरिया,
हमरा के की देबे इनाम, मजुरनी।
जब तुअ बखसब कोसीमाय सिर के सिन्दुरवा,
भरि रति नचबा देबौ देखाय।
भरि रति कोसीमाय नचबा देखायेब
होयत भिनुसरबा बोलिया देबौ सुनाय।
चुटकी बजाय कोसीमाय मजूरा के जियाबे,
खुसी गे भेलै मैया बन के मजूरनी।
भरि रति आगे मजुरनी नचबा देखाबे,
होयत भिनसरवा बोलिया दिहे सुनाय।
गावल सेवक जन दुहु कल जोड़ि
गरूबेर कोसी माय होहु न सहाय।

( 14 )

बहैत पुरवैया कोसीमाय डोललै सेमैर,
नदिया किनारे महामैया भइये गेलखिन ठाढ़ि
नैया लाऊ मलहा जे भाय,
पांचो बहिन दोलिया मलहा उतारि दियो पार।
कथी के नैया कोसीमाय कथी के पतवार
कोने विधि नैया उतारि दियौ पार।
सोना के नैया कोसीमाय रूपा के पतवार,
झमकैत दोलिया उतारि दियौ पार।
खनै नैया खेबै कोसीमाय खने भसियाय
खने मलहा पूछै जाति के ठेकान।
जाति के रै छियै मलहा बाह्मनक बेटी,
नाम हमर छियै कोसिकामाय।
आब की पूछै मलहा दिल के बात,
बंहिया जे छूबै मलहा कोढ़ि फूटि जाय।

( 15 )

पुरबा जे बहै छै झलामलि हे कोसी,
पछिया बहै छै मधुर।
अंगना में कुंइयां खुनाय दियौ कोसिका माय,
बांटि दियौ रेशम क डोर।
झटपट अंगिया मंगाय दियौ कोसिका माय,
भैरव भैया भुखलो न जाय।
साठी धान कूटि के भतबा रान्हलियै,
मुंगिया दड़रि के कलौं दलि।
जीमय ले बैठले भैरव छोट भइया,

कोसी बहिन बेनिया डोलाय।
बेनिया डोलाबैत बहिनो चुबलै पसीना,
नैना से ढरै मोती लोर।
जनु कानु जनु खिझु कोसिका हे बहिनो,
तोरो जोकर डोलिया बनाय।
घर पछुअरबा मे बसै छै कहरबा,
कोसी जोकर डोलिया बनाय।
झलकैत जेती ससुरारि।

( 16 )

गिरि परबत से चलल माता कोसिका, चलि भेलै गंगा-स्नान
घड़ी एक पहुंचबैत माता कोसी गंगा घाट।
निशि भाग रति माता कोसिका करै छियै किलोर,
से लाबू नैया दियौ गंगाजी के घाट पार।
से माता निशि भाग रति मे किए करै छै किलोल
की छियै दैतनी-की छियै भूतनी।
नै छी हम दैतनी, नै हम भूतनी, जाति के हम छी बाम्हन
बाप राखलक कोसिका नाम।
कल जोड़ि माता करै छी परनाम, टुटले नैया टुटले पतवार
कोना करब गंगा के पार।
सोना से मढ़ाय देबौ दूनू मांगि, रूपा से मढ़ैबौ करुआरि
सात दिन सात रति माता कोसिका झलहेर खेलबैये।
सात दिन सात राति माता कोसिका खेललौ झलहेर,
से मांग रे मलहा इनाम।
एक सत केलियै-दोसर सत केलियै-तेसर सत केलियै परिनाम घर मे माता छै आन्हर बुढ़िया माय, हमरा पद बांझ दे छोड़ाय माताके हेतौ आंखि दुई लोचला, तोराके बांझ पद देब छोड़ाय कल जोड़ि गिनती करै छी माता कोसिका,
रन बेरि कोसिका होहु ने सहाय।

( 17 )

कते जल बहै छै बहिन कमलेसरी,
मैया हे कते जल बहै छै हे।
ठेहुना जल बहै छै मैया कमलेसरी हे,
अगम जल मैया बहे कोसीधार से अगम जल।
कहमां बहैले कोसीमाय कहमा लट हे झारले
कहमा कैले सोलहो सिंगार।
वाराहछेतर से एलै कोसीमाय, बाटहि नहैले,
गहबर कैले सोलहो सिंगार।
जीरवा सन के दंतबा गे कोसीमाय
सिहारी फाड़ल माथ।
चानन छेदि कोसीमाय खाट देबौ घोराय, गे सोना से,
डंड़बा देवी छराय, गे सोना से।
अगिया लगेबी रे सेवक, रानू सरदार छी हमर लोग।

( 18 )

उतरहि राज से ऐली मा हे कोसिका हे
पश्चिम केने जाय कोसीमाय असीधार
हरदी रंगल साड़ी गे कोसीमाय, सिनुरा भोगारल
अंचरा करै छौ महामहि
जनु छेडु जनु छेडु रे मलहबा,
हम छी बिन पुरुषक नारि।

( 19 )

कहमा बहैले कोसीमाय, कहां लट हे झारले
कहमा कोसीमाय कयले सिंगार।
कमला नहैलो तिरहुत लट झारलौं
गहबर कैलों सिंगार।
किअ देय समदब मैया कमलेसरी

किअ देय समदब कोसीमाय।
पान देय समदब मैया कमलेसरी
पाठी देय समदब कोसीमाय।

( 20 )

सब के बरदिया कोसीमाय, पार उतरि गेलै,
हमरो हे बरद कोसीमाय ऊसरे मे मझाई हे हमरो बरद
जब हम आगे बहिना पार देवौ उतारि गे तोहरो बदर
बहिना गे हमरा के की देवे इनाम।
जब हम आहे मलहा बसबै ससुररिया,
तब छोटकी ननदी देबौ इनाम रे मलहा
छोटकी ननदिया हे कोसीमाय देवौ इनाम।
छोटकी ननदिया बहिना हमरो हे बहिनिया हे
कैसे कोसीमाय लेवौ इनाम हे।
कोसीमाय सांचले हे यौवन
हमरो यौवन हे कोसी विष के अगोरल
मलहा छुबैत मरि जेबै रे।

( 21 )

कहमा ते बहैये मैया कमलेसरी हे
हे कमला बहै छै बलान
कहमा मैया बहै कोसीधार।
अलापूर बहै मैया, मैया कमलेसरी हे
तिरहुत बहै छै मैया बलान
मैया धरमपुर बहै छै कोसीधार हे।
किअ दय अमदब मैया मैया कमलेसरी हे,
मैया हे किय दय समदब बलान हे।

( 22 )

माय रोता हंटौ गे कोसिका बाप तोरा बोधौ गे
मति जाह सौरा असनान।
अंगना में आगे कोसिकाकुइयां खुनाय देबौ
नित उठि करिहे असनान।
हंटलो ने मानै कोसी बोधलो ने मानै
चलि भेलै कोसिका सौरा असनान।
जाहि घाट आगे कोसिका-करै गो असनान
ताहि घाट अहिरा पड़रू नमाबै।
घाट छोछू बाट छोडू छौड़ा पूत अहिरा
तिरिया जानि हम करब असनान।
पालट ने नूआ अहीरा घरही बसरलौं
तिरिया जाति हम करब असनान।
हमरो चदरिया कोसिका पहिरि करू हे असनान
अगिया लगेबौ अहीरा तोहरो चदरिया
बज्र खसैबौ तोहर चदरिया।
तीतले भीजल जेबै अपन घर दुआर।

( 23 )

जेहि नदी कोसी माय सूतौ नै थाहे,
से नदिया देल ऊसर लोटाय।
आगू आगू माता ऊसर लोटाबे
पाछू चरै नब्बेलाख धेनु गाय।
राजा शिवसिंह पोखरि खुनैलन्हि
ओहि पोखरि कोसिका कयल पयान।
आगू आगू रानू सरदार घसना खसाबे
पच्छू कोसी करै सन्मुख धार।

## ( 24 )

रतिए जे एलै रानु गउना करैले,
कोहबर घर में सुतल निचित।
जकरो दुअरिया हे रानो कोसी बहे धार
सेहो कैसे सूते हे निचित।
सीरमा बैसल हे रानो कोसिका जगाबे,
सूतल रानो उठल चेहाय।
कंख लेल धोतिया हे रानो मुख दतमनि
माय तोहरा हंटौ हे रानो बाप तोरा बरजौ
जनु जाहे कोसी असनान।
हंटलो न माने रानो दबलो न मान
चली गेलै कोसी असनान।
एक डूब लेल हे कोसी दुई डूब लेल
तीन डूब गेल भसियाय।
जब तुहँ आहे कोसिका हमो डुबाइबे,
आनब हम अस्सी मन कोदारि।
अस्सी मन कोदरिया हे रानो बेरासी मन बेंट
आगू आगू धंसना धसाय।

## ( 25 )

मचिया बैसल हे कोसिका, भितिया अंगुठल
दीनानाथ के बटिया हेरै छै।
कहंमा से आनबै हे कोसी चानन के लकड़िया
कहां से मंगेबै सूतिहार।
मोरंग से मंगेबै हे कोसिका चानन लकड़िया
तिरहुत से मंगेबै सूतिहार।
कथी से छेबैबे हे कोसिका चानन के लकड़िया
कथी से छेबैबे हे कोसिका पैर के खड़म।
कहां गेल किअ भेल दीनानाथ दुलरुआ
पीन्हि लिअ पैर के खड़म।

( 26 )

गौना करैले रानू कोबरा बसैले
ओ कोबरा में सूतलि निचित।
माय तोरा हंटौ बाप तोरा धोपौ
जनु जाह कोसी असनान।
कांख लेल धोतिया रानू हाथ लेल लोटवा
चलि भेला कोसी असनान।
एक कोस गेला रानू दुई कोस गेला
तीजे कोस कोसी केर धार
एक डूब देलैन रानू दुई डूब देलैन
तीजे डूब घसना खसाय।
अस्सी मन कोदरिया कोसी माय
चोरासी मन डांट।
जोड़ा एक पाठी कोसी माय
तोहरा चढ़ैबौ हे,
बकसि देहु रानू केर परान।

❖।❖

# झूमर-गीत

( 27 )

मुठी एक डैड़बा गौ कोसिका अल्पा गे बयसबा
ये भुइयां लोटै नामी नामी केश
कोसी माय लौटे छौ गे केश।
केशवा सम्हारि कोसी जुड़वा गे बन्हाओल-जुड़बा गे बन्हाओल
कोसीगे खेपबा कुहुकै मजूर।
उत्तरहि राज से एलै हे रैया हो रनपाल
से कोसी के देखि देखि सूरति निहारै
सूरति देखी धीरज नै रहै धीर।
किए तोरा कोसिका चेका पर ढ़लक,
किए हे रूग़ गढ़लक सोनार
नै हो रनपाल चेका गढ़लक
नै रुपा गढ़लक सोनार
अम्मा कोखिया हो रनपाल हमरो जनम भेल
सूरति देलक भगवान-से हमरो सूरतिया।
गाओल सेवक जन दुहु कर जोड़ि
गरुआ के बेरि होहु ने सहाय।

( 28 )

कोसी के मांग मे टीका सोभत है
सिनुरा सोहत अजब रंग हे कोसी माय
खेतल है चौहटिया।
खेलत है चौहटिया हे कोशी माय ओढ़त है ओढ़निया
कोसी के गला में हंसुली सोभत है।
हरबा सोहत अजब रंग हे कोसीमाय
खेलत है चौहटिया।
कोसी के पंहुचा में चुड़िया सोभत है

चुड़िया सोहत अजब रंग हे कोसीमाय
खेलत है चौहटिया।
कोसी के डांड़ में घघरा सोभत है
घघरा साहत अजब रंग हे कोसीमाय
खेलत है चौहटिया।
कोसी के पैर मे पायल सोभत है
पायल सोभत अजब रंग हे कोसीमाय
खेलत है चौहटिया।
खेलत है चौहटिया हे कोसीमाय ओढ़त है ओढ़निया।

( 29 )

सोन सन केश गे बुढ़िया, कन सन दांत हे
ठेंगनि लागल बूढ़ी माय हे
खाय लेहु आरे रानू दही चूड़ा भोजन हे
पीबि लेहु गंगा जल नीर हे
चढ़ि लेहु आरे रानू पाट केर डोलिया हो
तब करू कोसी असनान हे
ककरा पर छोड़बै गे बुढ़िया अन्न धन्न सम्पत्ति गे
ककरा पर छोड़बै बूढ़ी माय हे
ककरा पर छोड़बै गे बुढ़िया बालक तिरिया हे
कैसे करबै कोसी-असनान हे
भाइ पर छोड़िहह हे नानू अन्न धान्न सम्पत्ति हे
तब करू कोसी असनान हे
गौनमा के धोतिया गे बुढ़िया मलिनो ने भेलै,
कैसे करबे कोसी असनान हे
जाति के बरनमा गे बुढ़िया कहि के सुनाब हे
तब करबै कोसी असनान हे
हमहुं जे छियै रे रानू बाभन कुल बेटिया हे
नाम थिकै कोसिका कुमारि हे
कौन रे कुलके तू थिकही रे नानू

किअ थिकौ तोहरो नाम रे
जाति के जे थिकियै हे बुढ़िया कानू ते कन्हैया हे
नाम थिकै रानू सरदार हे
कान्हा कोदरिया हे रानू, हाथ वसूलिया है
झड करू कोसी असनान हे।

( 30 )

कौने तू कुल के थिकही गे बुढ़िया किये थिौ तोर नाम हे
जाति के जे थिकियै रे रानू ब्राह्मण के बेटिया रे
नाम थिकै कोसिका कुमारि हे।
कोन तू कुल के थिकही रे रानू! किय थिकौ तोर नाम हे।
जाति के जे थिकियै गे बुढ़िया कानू कन्हैया गे,
नाम थिकै रानू सरदार गे।
सगरे समैया रे रानू कूपतर नहौले रे,
आज करु कोसी असनान हे।
ककरा सौंपबै गे बुढ़िया अन्न धन सम्पत्ति गे
ककरा सौपबै बूढ़ी माय हे।
ककरा सौपबै गे बुढ़िया घर केर धरनी गे,
ककरा सौंपबै छोआी बहिन हे।
करम सौंपिहे रे रानू अन्न धन सम्पत्ति,
धरम सौंपिहे बूढ़ी माय हे।
घर के जे धरनी रे रानू, नेहरा पठाबिहे रे
ससुरा पठाबिहे छोटी बहिन रे।
माय तोरा हटौ रे रानू, बहिन परबोधौ रे
जाति जाहु कोसी असनान हे।
खाय लेहो आहे रानू, घृत मधु भोजन हे
पीबि लेहु गंगाजल नीर हे।
नहि खेबौ आहे अम्मा घृत मधु भोजन हे
नहि पीबौ गंगाजल नीर हे।
कोसिका कुमारि हे अम्मा डेढ़ियाहि ठाढ़ि हे
हमे जाइ छी कोसी असनान हे।

( 31 )

सगरे समैया कोसिका सुति बैसि गमौले, हे भादो मास
मैया फेंकल पलार कि भादो मासे।
सबहुक नैया कोसिका अमरपुर हे पहुंचल, कि मोरे नैया
उसर गे लोटाबे कि मोरे नैया।
देबहुं गे कोसिका जोड़ी गे पाठी कि घर गेने
हे कोसिका चढ़ेबौ पाकल पान मैया घर गेने।

( 32 )

पाट केर ढ़ोलिया चढ़ल माता कोसिका
गौ चलि भेलै।
मैया मर्त्य संसार, चलि भेलै।
आहो कहां गेल किय भेल,
तहुं वीर रानू, चलू ओ चलँ
रानू मर्त्य-संसार चलू ओ चलँ
हमे तोरा पूछियौ माय कोसिका
वचन साधु भाव, गौ मैया।
किनका दुअरिया कोसी माय हेबै मेजमान
गौ किनका दुअरिया।
मार्त्य-संसार में बसैये पगुआ मलाह,
ही हुनके दुअरिया।
रानू वीर हेबै मेजमान
हौ हुनके दुअरिया।
घड़ी एक चलबै गौ कोसिका माय
पहर-पन्य गौ बितलै
मैया गो जूमि गेलै, कोसी माय
मर्त्य-संसार गौ जूमि गेलै।
कहां गेल किअ भेल पगुआ रे मलहा
दुआरे ऊपर एलौ अनूप मेजमान।
मलना बचन सुनै पगुआ रे मलहा,

एकै हाथ ले ले पगुआ सिंहासन पाट
दोसर गंगाजल नीर।
पैर धोऊ पाठ बैठू तहँ माय गौ कोसिका
गौ कहि देहु ने कोसिकामाय पंथ के कुशल।
हमरो कुाल मलहा दस छै कुशल में,
कुशल में दुनिया संसार।
कहु कहु कुशल मलहा अपन कुाल रौ कहु रे कहु
हमरो कुशल कोसीमाय दस छै कुशल मे,
कुशल में कुल कुल परिवार।
एक ते कुशल कोसीमाय कहलो ने जाय छै गे मैया
चरहा कोसी माय लगेलौं फुलवारी
सेहो रे फलबारी गेलै सुखाय।
जब तोरा फूलै तो मलहा सूखल फुलबारी
जबे हमरा रे मलहा किअ देबे रे हमरा के
जब मोरा फुलैतो कोसीमाय सुखल फुलबारी,
गौ मैया कोसी गौ कोसी गहबर देबौ बनाय।
फूल तोड़ि चढ़ैबो कोसीमाय
नित गहबरबो कोसीमाय गौ नित चढ़ैबौ फूल तोड़ि।
जाइयौ जाइयौ जाइयौ रौ मलहा,
अपन रौ फुलबारी रौ, बाहू देखिहौ गे।
मलहा अपन फुलबारी देखिहौ गे।
कानैत-खिझैत मलहा दौड़ल चलि जाय रौ
जूमि जे गेलै मलहा अपन फुलबारी।
फूल देखिके हंसैये मलहा हंसैये विकरार
अहो दा पांच फूल तोड़ि लिए आबो।
हौ दस पां।
कल जोड़ि के करैये मलहा कोसी के प्रणाम,
रौ कोसी के प्रणाम।
जे तोहें कहले कोसी तुरत भै गेलै,

गौ माता सूखल फुलबरिया गेलै फुलाय।
मावल सेवक जन दुहु कर जोड़ि,
गौ गदआक बेरि कोसीमाय होऊ न सहाय।

( 33 )

सगरे समैया कोसीमाय उठि उठि गमैलौं,
भादो मास कोसीमाय सजलौं बारात।
केओ तोरा आहे कोसीमाय मौरिया उड़ाहत
केओ तोरा जायत बरियात।
मलिया तोरा आहे कोसीमाय मौरिया उड़ाहत,
नगरक लोग साजत बरियात।
केओ तोरा आहे कोसीमाय डलबा उड़ाहत
केओ तोरा जायत बरिया।
डोमरा तोरा आहे कोसीमाय डलबा उडत्रहत।
नगरक लोग जायत बरियात।
केओ तोरा आहे कोसीमाय सड़िया उड़ाहत
केओ तोरा जायत बरियात।
कपड़िया तोरा आहे कोसीमाय सडित्र्या उड़ाहत
तिरहुत लोग जायत बरियात।
केओ तोरा आहे कोसीमाय चूड़िया उड़ाहत
केओ तोरा जायत बरियात।
केओ तोरा आहे कोसीमाय चोलिया उड़ाहत
केओ तोरा जाएत बरियात।
कपड़िया तोरा आहे कोसीमाय कपड़ा उड़ाहत
तिरहुत लोग जायत बरियात।
केहो तोरा आहे कोसीमाय हंसुली उड़ाहत,
केओ तोरा जायत बरियात।
सोनरा तोरा आहे कोसीमाय हंसुली उड़ाहत,
तिनहुत लोग साजत बरियात।
केओ तोरा आहे कोसीमाय सिनुरा उड़ाहत

केओ तोरा साजत बरियात।
बहेलिया तोरा आहे कोसीमाय सिनुरा उड़ाहत,
तिरहुत लोग साजत बरियात।
केओ तोरा आहे कोसीमाय तेलबा उड़ाहत
तिरहुत लोग साहज बरियात।
केओ तोरा आहे कोसीमाय टिकुली उड़ाहत
केओ तोरा साजत बरियात।
बहेलिया तोरा आहे कोसीमाय टिकुली उड़ाहत
तिरहुत लोग साजत बरियात।

( 34 )

अखरे गोबर से सासु... अंगना नीपलियै
ओहि चढ़ि ना हियाबहुं भैया के बटिया,
सासु जेबै नैहरबा ओहि चढ़ि ना।
काटबै सामाल सीकिया,
बैढ़बै जमुनमा, ओहि चढ़ि ना।
सासु जैबे नैहरबा ओहि चढ़ा ना।
एक चेहरि खेबले रे मलहा दुई चेहरि खेबले
तेसर चेहरिडूबलै भैया के बहिनो है कि। ओहि चढ़ि ना।
अम्मा जे सुनतै रे मलहा कोसी धंसि मरतै रे कि,
बाबा जे सनतै रे मलहा धरती लोटेतै रे किय,
भैया जे सुनतै रे मलहा जाल बांस खिरेतै रे कि,
भौजो जे सुनतै रे मलहा भरि मुंह हंसतै रे कि
भने ननदो डूबली रे की-

( 35 )

समर समैया कोसिका हँसि खेलि बितेलियै से भादव मासे
कोसीमैया लागै छै पहाड़ से भादव मासे।
एक ते अन्हार राती, दोसर बसात धाती-सूझै नाही
मैया गे रेत के बहाव से सूझै नाही।

मलरि मलरि कोसिका करै अनधोल से नदी बीचे
कोसीमैया मन डरपाये से नदी बीचे।
फाटल नबेरिया कोसिका, गून पतवार से टुटि गेलै
मैया गे लागहु गोहारि से दया करू।
गोड़ लागी पैया पड़ौ मैया सतवन्ती से राखि लेहु
मैया गे हमर सोहारा से राखि लेहँ

❖|❖

# विभिन्न-गीत

## ( 36 )

कथी ले रोपलियै कोसीमां आमुन जामुन गछिया हे
कथी ले रोपलियै बीट बांस।
कथी ले बढ़ेलियै कोसीमां नामी नानी केसिया हे
कथी ले केलियै सिंगार।
खाय ले रोपलियै आमुन जामुन गछिया हे
जूड़ा ले बढ़ेलियै नामी नामी केस।
छैला ले केलियै सिंगार।
खइयो ने भेलै कोसीमां आमुन जामुन फलबा हे
बान्हियौ ने भेलै नामी नामी केसबा के ... जुड़बा।?
मोगल भेलै जीवकाल हे कोसीमाय।

## ( 37 )

कहमा बहै छै मैया कमलेसरी, कहमा बहै छै पलार।
तिरहुत बहै छै मैया कमलेसरी, 'मंगरी' बहै छै पलार।
कते जल बहै छै मैया कमलेसरी, कते जल बहै छै पलार।
अगम जल बहै छै मैया कमलेसरी, थाहे जल बहै छै पलार।
कथी लय बोधबै मैया कमलेसरी, कथी लय बोधबै पलार।
पान फूल लै बोधबै मैया कमलेसरी, लड्डू लैके बोधबै पलार।
बीचे बीच दियरो परिय गेल कोयला वीर
लगेलकै मालिन फुलबरि।
नीक नीक फूल तोड़ि-तोड़ि, चलल कोहला कमला दुआर।

## ( 38 )

कहमा उपजल कोसीमाय झालरि गुअबा हे,
मैया गे कहमा उपजल पाकल बीड़ा पान।
तिरहुत उपजल कोसीमाय झालरि गुअबा हे,
मैया गे मोरंग उपजल पाकल बीड़ा पान।

कथी कांति कतरब मैया गे झालरि गुअबा हे
कथी कांति कतरब पाकल बीड़ा पान।
सोना कांति करतब कोशीमाय झालरि गुअबा हे,
रूपा कांति कतरब पाकल बीड़ा पान।
पान लियौ पान लियौ हो रैया रनपाल हो,
रनपाल जाहो मोरंग सन राज।
साधिऔ हो साधिऔ रनपाल मथुरा-गुंजन कौल।
कैसे हम लेबै कोसीमाय पान के बीड़ा गे,
मैया गेबिना साधले मथुरा-गुंजन कौल।
मथुरा-गुंजन बड़ हे जुझार।
जाहो हौ जाहो रनपाल, साबिहो मथुरा-गुंजन कौल,
बेर बखत पड़िते तू लिह कोसीका नाम।
घड़ी एक चललै रनपालन, पहर पंथ चललै,
जूमि गेलै मोरंग क राज।
खेत ते बदान कै के लड़ैये मथुरा गुंजन कौल,
खेत ते बदान ककै के कोसिका सुमरि के हो
रनपाल लगाबे मोरा काछ।
काटे ये मथुरा के सिर
सिर के घुमाय के फैकेये कोसिका माय के पास
धौला गिरि पर्वत।
गबलल सेवक दुहु कल जोड़ि गोरू बेरा होय बड़न सहाय।

( 39 )

जब तोहर भेल हे कोसिका सिंहेश्वर से अपमान,
घाटे घाटे नैया डुबैले।
जब जब आहे कोसीमाय नैया डुबैले,
घाटे घाटे पुलबा दियैले।
जब तुअ आहे कोसिका पुलबा दियैले,
तरे तरे कटनिया लगैले।
जब तुअ आहे कोसिका कटनिया लगैले,

काछ-माछ ऊसर में लोटैले।
जब तुअ आहे कोसिका पश्चिम दिसि चलले,
कैने गेले नगर उजाड़।
कोठा अटारी सब के तुअ डुबैले,
नगर लोग खाय छै पछाड़।

( 40 )

खुटबा जे गाड़ल कोयला, झांझि पसारल,
बहिया लै गेल मझधार।
उत्तरहि राज से ऐलै एक बुढ़िया,
चारि कन्या भे गलै ठाढ़ि
पूछै लागलै जाति कुल ठेकान
कोन बरन तू छियै रे बाबू की छियौ तोहरो नाम।
जाति के जे छियै हम कोल्ह बरन माय।
बाप रखलकै 'कोलहावीर' नाम।
हमर नाम ठेकान बुझले गे बुढ़िया
आपन कही दे ठेकान।
हम जे छियै रे बाबू ब्राह्मणी के बेटिया
माय बाप राखलकै कमला नाम।
सात दिन क भूखल छियै रे बाबू
तोरा बांहि लग आबि भेलहुं ठाढ़ि
एक माछ दहीन रै बाबू जलखै मे खेबै पकाय
माछ जब देलकै कोहला, कोसिका ले तड़िके पकाय
पकायल माछ धोय लय गेल कमला, माछ भागि गेल पड़ाय
हम बहिनो कोसिका, कमला तोहे मैया
कोहला चले साधे तिरहुत राज।

( 41 )

धर्मपुर के तारले हे कोसिका मैगेरी के बोरले
सिंधेश्वर थान कइले पयान
एते दुख देल हे कोसी मां एते दुख देल
आरी चढ़ि रोअत किसान, हे आरी चढ़ि।
अखनी देबौ तोहराधुरी बान्हल पठिया
अगहन मास दुध देबौ ढार,
हे अगहन मास।
जब हमरा के देबह बकैस।

( 42 )

कहमा उपजल गे मैया झालरि-गुअबा हे
कहमां डांटरियो पान हे।
अगम जल मोरि तरनी कोसिका हे
मोरंगहि उपजल गे मैया झारि गुअंबा हे
तिरहुत डांटरियो पान हे
अगम जल मोरि तरनी कोसिका हे
सेहो पान खेति मोरा कोसिका कुमारि हे
रंगि जेतैन बत्तीसो दांत हे,
अगम जल मोरि तरनी कोसिका हे।
हंसि पूछै बिहंसि पूछै रानु सरदार हे
देखौ बहिनो दांत केर जोति हे,
अगम जल मोरि तरनी कोसिका हे।

( 43 )

गउनमा कराय एलै सलहेस देव अपनो चललै विदेश।
गउनमा के साड़ी मलिन नहि भेलै सासु पढ़ै गालिया उदेश।

सासु करै ओलिय ननद कहै बोलिया

सलहेस देव अपनो चललै विदेश।

कोसी माय रहैऔ गवाह सलहेस चलै विदेश।

## ( 44 )

कहमा उपजल झालर गुअवा, कहमा डाटरि पान।

इहो पान खैता रानू सरदार रंगैता बतीयो मुख दांत।

सातो बहिनमा में कोसिका दुलारि छलै,

ताहि से रंगाबै रानू दांत।

देखैं देखैं आहे पियबा दांत केर जोतिया

देखै दहो आपनी सुरतिया।

अखनी ने देखे देबौ सुरतिया

घर मे छै मैया बहीन।

जखनी जे देखे देबौ दांत केर जोतिया

तोरे मोरे होइते पिरीत।

## ( 45 )

गौना करैले मझुआ कोबरा बसैले

कोबरे से कोसिका करै छै जबाव।

भीन होइयौ भीन होइयौ हे कुमर

बड़का भैया के लड़का बहुत करै छै जबाव।

कोना हम भीन हेबै गे कोसिका,

बड़का भैया से पिरीत बहुत।

जतना कमैव हे कुमर ततना खैत,

दिन दिन हैब तू दरिद्र।

बेचुगे आहे कमरी निमुधन गैया

बेचि लिय कारी महीस।
नहिं हम बेचवै कोसिका निमुधन गेया
नहीं हम बेचबै कारी महींस।
नहिं हम हेबै को कोसिका निमुधन गैया
नहिं हम बेचबै कारी महींस।
नहिं हम हेबै कोसिका भैया से भिन्ना,
रहबै हम संग पिरीत।

❖|❖

# MOTHER KOSI SONGS

Translated by

**T.S. Prido, I.C.S.**

(Collector, Bhagalpur)

Published in Men in India

March, 1943

# Mother Kosi Songs

Mother Kosi has long held sway. She visits the the land, meting out punishment, giving rewards, striking with with dread terror, and often with shims difficult for her subjects to comprehent. Her father is Himalaya- father to many maidens- the Creator Shiv enthroned in the heights. Famous she is and powerful-more powerful than all others. Worshipped in song, and a constant presence, her influence is very real to the people in her tracts.

For the Kosi river rushes down through the foothills from its huge catchment area behind them in Tibet and Nepal, a roaring flashing torrent debouching on to the gently sloping plain of North Bhagalpur in Bihar. There are rushes on, splayed into deltaic mazes, cutting the sandy soil with rapidity and caprice. The snows melt in May and the volume swells. Over a widening belt the earth becomes sodden and flooded. The cultivator on the margin of the flood area wonders whether he will be engulfed or saved. Silt and sand of which the extent becomes known when the water finally subsides in October, bring with them grass and reeds in the long upper reaches gradually, overwhelming man's efforts at cultivation. The next victim shudders. Lower down, nearer the end of its course, and after the heavier sand has been dropped, wide sit-bottomed lakes, interspersed by the true stream currents bring winter fertility. Kosi's gifts and devastations are a hope and a fear to all, her vagaries a wonder.

Fearful also are thw winter cold and fevers that follow in her wake, and pitiful are the nakedness and poverty which she brings. The fortunate are able to praise her for her patronage of the cow-a reference to the flourishing ghee trade of the grass jungle

tract. But she brings despair and homelessness the most-a despair beten off as long as possible but bringing physical and mental deterioration, ultimately driving the small cultivator to debt and emigration, abandonment of home and usually to premature death. Yet, when she has passed on many imagine her return beneficial. She leaves a waterless thirsty tract behind.

The songs that follow, are expressive of the reactions of the simple people to contact with this overhanging presence. They are sung spontaneously without any particular regard for occasion, and though topical songs are frequent, there are various obvious folk themes which are embodied and joined together according to the inclination or knowledge of the singer. The songs are mostly straightforward and simple.

The first two themes relate to the difficulty in crossing the treacherous streams-First is the Boatman them as illustrated by the following two songs. The boatman suspects his passenger is a witch.

## I

Blows the east wind O Kosi mother,
Waves the Semar grass.
Kosi stands waiting on the river bank
'Bring the boat, bring the boat, O boatman brother
We five sister would cross ot the far side'.
Of what is your boat, O boat?
Of what your steering oar?
How shall we five sisters embark and cross thestream?
'The boat is golden, O kosi mother,

and silver is the oar,
Embark on this, O Kosi, and I will take you across.
Now the boat is rowed on; now the current takes it'
Now the boatman asks them what is their caste.

## II

Kosika of seven sister stands on Jamuna's bank
'Bring a boat, bring a boat, O Jhingawa boatman,
Take us seven sisters across,
Of what is the boat, O boatman, of what your rowing oars?
How will you, O boatman, take us across?
'the boat is of gold, the oars of silver
I will take you easily over.'
He rows the boat onwards; again it is swept back;
Again the boatman asks them what is their caste?
'I am a Bramhin's daughter; Kosi is my name.
Now why are asking me, boatman, about my caste?

This again is related to Kamla, the gentles of the sister, in the following song, in which the messenger of Shi takes the oar and brother Koitla (another North Bihar river) steers her across the Ganges;

## III

"The bullocks of all others, kosika,
you have taken across,
But mine to the barren land, you have turned back."
'at ach of your crossings, Kosi,
I will give ten beter leaves;
At homes a milk offering and a great fast will I ive.'
'At home in household things, Omtrader,
you will even forget my name.'

## IV

Along the river bank calls Kamla Devi,
'Bring the boat, bring the boat, O Jhimla boatman!
'Broken is the boat, O Kamla mother, broken are the Oars.
How shall I take you, mother, across the Ganges stream?
Eight woods took Kamla and made the boat.
The front plank she coloured vermillion
On the back she put gold leaf and silver.
On the front plank Bhirab series she oars;
On the back Koila holds the stering-oars;
In the middle sits the virgin Kamla.
Jhimla rows the boat on; again it is swept back;
Sometimes Jhimla asks her for a ift.
'Row on! Take the boat to the bank!
Thus sings your servant, mother with folded hands;
forgive, forgive his money faults'.

There is the very common 'trader' them appearing with money variation, in which cajolery, protestations and promises eventually ecure a save passage in grass and the water wastes all trade is confined to the pack bullock. Travel and trade is slow and not withour dangers. The scouring and silting of steams make them dangerous to across in flood. The small boat of the ferries of offset and is swept away;

## V

'She the river, see the river, the Tiluga river, there mother flows river Balan.
The bullocks of all others, Kosika,
have reaached Amarpur;

But my cows and bullocks have been turned back to the barren land.

At every crossing, mother,
I'll offer ripe rolled betel leaves;
On reaching home, mother,
I will give you two young goats.'
'On reaching home, in talk with his caste-folk,
a trader forgets even Kosi's name;
Only in time of trouble, my trader,
do you make profusest vows.'
'Even if my life goes, Kosika, even if my breath goes,
I will not forget your name;
This time, O mother, let me go over safely.'

## VI

'They all sell "long-ilachi" Kosi mother;
I deal in ripe rolled betel leaves.
All others' you have crossed over, Kosi,
But mine you have turned back to the barren land.
"Sleeping and idling you have passed your time;
Now in Bhado you want to trade!"
'At every crossing I will offer "long-ilaichi",
at home a pair of kids
'Reaching home, trader, listening to your wife,
you will forget my name.'
'If my life goes, if my oul goes, never, Kosi mother, will I forget your name!'

Kosi has her natural attendants for she rules the land in which she flows, Bhairab is her messenger, lent by Himalayan Shiv, attending her in the next song. Another is her favourite devotee and engineer, Rano Sardar. Of a low labouring cast. Rano goes ahead with a spade to make the way. After Kosi has passed Bhairab

follows to throw up sand and earth. Boatman on the Kosi raise a shout 'Rano Sardar-ki-jai.'

## VII

Hail! Hail! O lordly Bhairab!
This way comes mother Kosis's stream.
Ahead goes mother Kosi, following comes the stream.
Then comes Bhairb brother,
Hail! Hail! O lordly Bairab!
Shopmen, remove your Bazzar,
Mother Kosi's Stream will pass this way!
Hail! Hail! O lordly Bhairab!

Simple propition is not always successful. One never knows if favour will follow the gesture of the devotee, for the movements of the Kosi, expect within broad limits, are unpredictable.

## VIII

I have made a milk offering
Mother Kosi is very unking
Still she has not left me.
I gave her a male kid
I gave her a she-kid
I made a milk offering
Indeed I made a milk offering

## IX

See the spray flas, see the brilliance,
See the Tiljuga river!
See the Kosi; see the Kosi!

River Balan flows by!
See the foam of Kosi mother!
O shining Kosimother, river Balan, flows by!
With what shall I satisfy Jalme Goar, mother,
How shall I worship Balan?
With beter and flowers, O mother,
will I worship him,
With a kid will worship Balan!
Even if my life goes, even if my breath goes
I will not forget your name!
Till now, Kosi mother, you have slept and waited.
When my turn come, O mother,
you rise to your height
Thus sings your servant, mother with folded hands!
Help him in his times of trouble.

## X

'Hard is the way to Morang, Salesh;
Kosi's streams have turned against me;
Kosi flows gently when other come;
There areine-cubit waves, Kosi mother, when I come;
The bullocks of all others, mother, are by now at Amarpur,
But mine of the barren land you have turned back.'
'If, O brother trader, I take your bullocks across,
What reward, O trader, will you give to me?'
'At each of your crossings, O Kosika, I will offer ten rolled betel leaves;
at hove I will offer milk, a feast, and a young goat.'
'In times of trouble, O trader,
you make profuse promises;
But you will forget' even the name of Kosika
when you reach home.

Even if my life goes, kosi mother,
even if my breath goes,
I will not forget your name.'
Seven times, brother trader,
you have made suchvows;
All seen times have you deceived me;
This time I will surely sink your boat.
All this time, Otrader, you have spent sitting at home;
Now in Bhado moth you start for trade!
All others trade in "long-aranchi';
I trade in ripe rolled betel leaves;
These I will offer thee; these I will offer thee."
With folded hands I pray thee, Kosi mother,
That I may cross this time.'

Kosi is of admirable gradeur, devastating, leveling. Songs evidently composed over a number of years refer to her changing course.

## XI

To Kosi let me respectfully pray,
Kosi with heaving ways;
Her stream emerges from the river hills
matchlessly strong.
She levels the steep slopes and fills the deep places;
Brings Kas and Patair, reeds, washing away the paddy;
Brings water intoevery house, creating disease;
Mosquitoes and dans flies she keeps with her, spreading fever
Even now show us some favour, merciful mother!

## XII

O flow slowly, Kosika! Gently flow!
O Keep safe the honour of Supaul!
O you broke up Madhipur and brought it to Supaul;
O keep safe the honour of Supaul;
O since, mother Kosi, Madhipura came
You have wrought destruction in Supaul;
O yourfeet I touch, Kosika, and make my prayer.
That yhour may save Supaul Bazzar.
O in supaul Bazzar, mother, all have become poor;
Government is not giving them relief;
O your feet I touch, Kosika;
O your feet I touch, Kosika;
I hold you feet,
Go away to the western land!

## XIII

Strange is your, grandeur, Kosi;
Your thunder in the Dhemra;
You have moved the railway
From Budhma to Mathai,
You have deposited sand;
Malaria you have spread;
Strange is your grandeur, Kosi;
You thunder in the Dhemra.
Supaul you have serized,
And have broken the Gajna bridge
You have reached to Alapur;
The walls of Alapur breaking,

Loudly you have thundred,
Strange is your grandeur, Kosi,
You thunder in the Dhemra.

## XIV

Kosi mother, the greatness is matchless;
Thou hast cut away road and made them streams;
Bamboos adn orchards, all have dried up,
Brush-wood grows on threshing-floor.
Neither paddy nor wheat has grown;
But, Koshi thou hast brought much 'kash' and 'patair'.
So sings the servant mother, with foled hands;
Give Souccour to the poor.

## XV

Hard days have overwhelmed me!
Anxieties have killed me
By taking loans I worked my fields;
I worked my field; my paddy the Kosi swept away;
Anxieties have killed me!
By selling my bowl and dish I pay my landlord;
I pay my landlord, and the traders call me scoundrel!
My son are naked! My daughters are naked;
The cloths of my wife are tornand old;
Anxieties have killed me!
Food has run short and fueltun short;
As fuel runs short,I fast in the morning!
Anxieties have killed me!
Hard days have overshelmed me!

## XVI

From mother Kosi's water, thousands have fallen sick.
There is no coundting how many have left this world,
Haste, haste, O Sarkar!
All we subjects are being washed away in Kosi's mid stream.
Haste, haste, O Sarkar!
From cold come fever, lasts all day...
Haste, haste, O Sarkar!
In hospitals no medicine is given; the doctor is a cheat.
For everything money is asked:
how can we carry on?
By selling family ornaments
We had prepared our, fields.
One day I saw a dry river-bed;
In the night is became a torrend.
In the morning I saw on all sides that allws under water.
Haste, haste, O Sarkar!
When an office comes this way, his oderly is bold;
For everything money is asked;
how can we carry on?
Haste, haste, O sarkar!
In lighter vein the boatman think and
sing of the day-to-day
Feminine actions of the sisters.

## XVII

In mid-tank, o kosi, are thick sandal tree
Below them are flowing thousands of streams
kosi fakes off her cloth s and ornaments
Has put on her bath cloth and taken her bath

o Great goodess kosika!
'who has taken my rings?
with what shall l do my sixteen adornments?
o Greartest if Woman, kosika!
'Hajipur market is now being held;
ln the shops there l' ll buy the ring and the mecklace,
And then make my sixteen adornments.'

## XVIll

of what is the comb, kamla? what are the comb-teeth?
on what are you sitting combing you hair?
Goldernthe comb, Kamla; silver thercomb-teeth
On a throne you are sitting combing your hair.
The comb breaks, Kamla; its teeth are all scattered;
The sixteen adornments cannot be made.

## XIX

Together flowers the sacred mother has gone to the gardener's garden;
Her hair has caught in the branches of the flowers.
'Where are your, Bhairab Bhagaty? Brother, free my hair'
'Of all woman the most exalted'
O sister, how can I free your hair?
Fire is flaming in your hair
'Of all woman the most exalted'
If I free your hair, O sister, what reward will you give?
'If you free my hair brother, I will give you a feast of fried rice and curd.'
'Of all woman the most exalted'
'Fried rice and curd may suffice for you sister; make me a --
'Of all woman the most exalted'

My husband's sister, O, brother, is the wife of another,
so how can I give her to you?
'Of all woman the most exalted'
Your servent, O mother has sung with folded hands;
Help him in his times of trouble; from age to age
he will repeat your name.

## ब्रजेश्वर मल्लिक
( 1917-1994 )

1941 - एम.ए. (इतिहास), पटना विश्वविद्यालय

1942 - सब-डिप्टी कलक्टर,बिहार सिविल सर्विस

सदस्य हिन्दी विधायी उप-समिति

1963 - अधिवक्ता, पटना उच्च न्यायालय

1994 - सायुज्ज मोक्ष

**प्रकाशित पुस्तक :**

* कोसी गीत
* अमृतमय जीवन की ओर
* चांदी का गिलास
* हिमालय पुकार रहा
* भ्रष्टाचार के दंश (आत्मकथा)
* The Role of services in the Making of India
* Splendour of Bihar

978-93-81591-79-6

वातायन
#0612-2222920